इकाई 7 अनुवाद की सीमाएँ

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृतिगत सीमाएँ
7.3 अननुवाद्यता की अवधारणा
  7.3.1 अननुवाद्यता से तात्पर्य
  7.3.2 अननुवाद्यता के आयाम
    7.3.2.1 विषय-वस्तु के स्तर पर अननुवाद्यता
    7.3.2.2 अभिव्यक्ति के स्तर पर अननुवाद्यता
7.4 अनुवाद की सीमाएँ : सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में
7.5 अनुवाद की क्षेत्रीयतापरक सीमाएँ
7.6 सारांश
7.7 शब्दावली
7.8 बोध प्रश्न के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद तथा अनुवादक की क्या सीमाएँ होती हैं?
- अनुवाद की विभिन्न सीमाओं के परिप्रेक्ष्य में प्रयुक्त होने वाली अवधारणा "अननुवाद्यता" से क्या अभिप्राय है?
- साहित्य, विज्ञान, कार्यालयी साहित्य तथा पत्रकारिता आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित विषय-वस्तु के स्तर पर और अभिव्यक्ति के स्तर पर अननुवाद्यता की स्थिति कब उत्पन्न होती है?
- सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की कौन-कौन सी सीमाएँ होती हैं, और उनका निवारण कैसे सम्भव हो पाता है?
- अनुवाद की क्षेत्रीयतापरक सीमाएँ कौन-कौन सी होती हैं?
- अनुवादक इन समस्त सीमाओं को लांघ पाता है अथवा नहीं? और यदि लांघ पाता है तो कैसे और किस सीमा तक?

7.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में अनुवाद की प्रक्रिया तथा प्रकारों की चर्चा की गई हैं। इस इकाई में अनुवाद की सीमाओं का विवेचन-विश्लेषण किया जा रहा है।

साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कार्यालयी साहित्य एवं पत्रकारिता आदि विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित विविध सामग्री के अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक को अनेक समस्याओं-सीमाओं का सामना करना पड़ता है। इस इकाई में इन्हीं सीमाओं पर चर्चा की गई है। इस इकाई में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की क्या सीमाएँ हैं? इस चर्चा का मुख्य उद्देश्य यही कहा जा सकता है कि मूल कथ्य को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक को दोनों भाषाओं की

आंतरिक एवं बाह्य संरचना की पूर्ण जानकारी अपेक्षित है। इसके बाद इकाई में ''अननुवाद्यता'' की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही साहित्यादि विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित सामग्री की ''अननुवाद्यता'' का दो स्तरों पर विवेचन किया गया है। ये दो स्तर हैं - ''विषयवस्तु'' और ''अभिव्यक्ति''।

सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ अनुवादक के समक्ष एक भिन्न प्रकार की चुनौती खड़ी करते हैं। इनके प्रति अनभिज्ञता या उदासीनता अनुवादक की सीमा बन जाते हैं। इस इकाई के अंतर्गत इस परिप्रेक्ष्य में भी चर्चा की गई है और साथ ही यह भी बताया गया है कि उनका निराकरण किस सीमा तक और कैसे सम्भव हो पाता है। इसी प्रकार अनुवाद की प्रयुक्तिपरक और क्षेत्रीयतापरक सीमाओं का भी उल्लेख किय गया है। उनसे सम्बद्ध विभिन्न समस्याओं-सीमाओं की चर्चा के साथ उनके निराकरण के प्रयासों पर भी प्रकाश डाला गया है।

7.2 स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृतिगत सीमाएँ

यह तो स्पष्ट है कि दो भिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए अनुवाद मध्यस्थता का कार्य करता है। चूंकि प्रत्येक भाषा का अपना एक पृथक अस्तित्व होता है, उसकी अपनी प्रकृति तथा एक विशिष्ट संरचना होती है, एक विशेष शैली होती है इसलिए अनुवादक को अनुवाद करते समय स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति को दृष्टि में रखकर, उनकी भिन्नताओं एवं समानताओं को समझकर अनुवाद प्रक्रिया में प्रवृत्त होना पड़ता है। यहाँ हम हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा की प्रकृति के कुछ उदाहरण देखकर इस बात को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

इस प्रसंग में सर्वप्रथम दोनों भाषाओं के वाक्यों की मूल संरचना को जानना आवश्यक है। अंग्रेजी भाषा के वाक्यों में कर्त्ता (subject), क्रिया (verb) तथा कर्म (object) का शब्दक्रम होता है अर्थात SVO की व्याकरणिक व्यवस्था होती हैं, जबकि हिंदी में कर्त्ता-कर्म और क्रिया का क्रम अर्थात SOV की व्याकरणिक व्यवस्था होती है। जैसे -

1.	He is going home.	S V O
	वह घर जा रहा है।	कर्त्ता-कर्म-क्रिया (SOV)
2.	I have learnt my lessons.	S V O
	मैने पाठ याद कर लिया है।	कर्त्ता-कर्म-क्रिया (SOV)
3.	I rented the house to him	S V O
	मैंने उसको मकान किराये पर दिया।	कर्त्ता-कर्म-क्रिया (SOV)

अंग्रेजी वाक्यों में क्रिया-विशेषणों का प्रयोग क्रिया के बाद होता है, जबकि हिंदी में क्रिया-विशेषण क्रिया से पहले आते हैं -

1.	Mohan is a frequent visitor to this place	-	S V ad.
	मोहन यहाँ प्राय: आता है।	-	**कर्त्ता-क्रिया** विशेष-क्रिया।
2.	I am very much tired.		S V ad.
	मैं बहुत अधिक थक गया हूँ।	-	कर्त्ता-क्रिया विशेष-क्रिया।
3.	He works very hard.		S V ad.
	वह बहुत मेहनत करता है।	-	कर्त्ता-क्रिया विशेष-क्रिया।

अंग्रेजी में सर्वनामों के प्रयोग के कुछ विशिष्ट नियम हैं। 'He' का प्रयोग पुल्लिंग के लिए तथा 'She' का प्रयोग स्त्रीलिंग के लिए तो होता ही है, साथ ही 'It' सर्वनाम का प्रयोग अचेतन के लिए, जानवरों के लिए, छोटे बच्चों के लिए, होना क्रिया से पहले पूरक कर्त्ता के रूप में, आने वाले संज्ञा या सर्वनाम पर बल देने

के लिए तथा समय आदि के वर्णन के समय भी किया जाता है। इसके विपरीत हिंदी में सभी स्थानों पर 'यह', 'वह', अथवा 'इनके' तिर्यक रूपों का ही प्रयोग मिलता है। जैसे -

1. He fired three rounds of bullet.
   उसने तीन गोलियाँ चलाई।
2. She is a good girl.
   वह अच्छी लड़की है।
3. It is an interesting point.
   यह एक रोचक बिन्दु (बात) है।
4. It is very hot today.
   आज बहुत गर्मी है।
5. It is my book.
   यह मेरी पुस्तक है।

अंग्रेजी में A, An, The को article (उपपद) कहा जाता है। इसमें 'A' तथा 'An' का प्रयोग उस स्थिति में होता है, जब किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति के बारे में बात नहीं होती तथा 'The' का प्रयोग तब होता है जब हम किसी निश्चित वस्तु या स्थिति के बारे में बात करते हैं। अंग्रेजी में कुछ विशेष प्रसंगों में 'definite article' का भी प्रयोग होता है, किंतु हिंदी में इसके सूचक कोई शब्द नहीं है।
जैसे -

1. I want to buy a few books.
   मैं कुछ किताबें खरीदना चाहता हूँ।
2. The Bible is a holy book of Christians.
   बाइबिल ईसाइयों का एक पवित्र ग्रंथ है।
3. The sun rises in the East.
   सूर्य पूर्व से निकलता है।
4. Delhi is the capital of India.
   दिल्ली भारत की राजधानी है।
5. I found an apple lying on the floor.
   मुझे एक सेब जमीन पर पड़ा मिला।

हिंदी में कर्त्ता और कर्म के वचन, लिंग या पुरुष की व्यवस्था के अनुसार ही क्रिया का रूप निश्चित होता है तथा क्रिया की अन्विति 'वचन' तथा 'वचन-पुरुष' के अनुसार होती है। जबकि अंग्रेजी में क्रिया की अन्विति कर्त्ता के साथ वचन तथा पुरुष के अनुसार होती है, लिंग के अनुसार नहीं। यथा -

1. भूषण पत्र लिखता है।
   Bhushan writes a letter.
2. उन्होंने मेरी पुस्तक चुराई।
   They stole my book.
3. वह अपना पाठ याद नहीं कर रहा है।
   He is not learning his lesson.
4. वे यही रहते हैं।
   They live here.
5. वह दूध पी चुका है।
   He has taken milk.

स्पष्ट है कि हिंदी के वाक्यों में कर्त्ता तथा कर्म के वचन, पुरुष या लिंग की व्यवस्था के अनुसार क्रिया का रूप निश्चित होता है।

अब कुछ ऐसे भी उदाहरण देखे जा सकते हैं जिनसे यह ज्ञात हो जाएगा कि अंग्रेजी में क्रिया रूप से एकवचन-बहुवचन का तो बोध हो जाता है, किंतु लिंग का बोध नहीं होता -

1. You are a good singer.
   तुम अच्छे गायक हो। / तुम अच्छी गायिका हो।
2. I am writing a book.
   मैं एक पुस्तक लिख रहा हूँ। / मैं एक पुस्तिका लिख रही हूँ।
3. You are going to school.
   तुम स्कूल जा रहे हो। / तुम स्कूल जा रही हो।
4. They eat mangoes,
   वे आम खाते हैं। / वे आम खाती हैं।
5. Will they not learn their lesson?
   क्या वे अपना पाठ याद नहीं करेंगे? / क्या वे अपना पाठ याद नहीं करेंगी?

अंग्रेजी के आदेशात्मक वाक्यों के बहुवचन रूप में क्रिया के मूल धातु रूप का प्रयोग होता है, किंतु हिंदी में

'इएगा' जोड़ा जाता है। जैसे -

1. Go to market and bring a packet of tea.
   तुम बाजार जाओ और एक पैकेट चाय का लाओ।
2. Walk slowly lest you would fall.
   धीरे चलो वरना गिर जाओगे।
3. Don't tell lie.
   तुम झूठ मत बोलो।
4. Accompany me for a morning walk.
   आप मेरे साथ प्रातः भ्रमण के लिए चलिए।
5. Go to your home.
   तुम अपने घर जाओ।

हिंदी में नकारात्मक शब्दों का प्रयोग क्रिया से पहले होता है, जबकि अंग्रेजी में रंजक क्रिया के पश्चात् इस प्रकार के शब्दों की स्थिति होती है जैसे -

1. I was not going home.
   मैं घर नहीं जा रहा था।
2. The students will not be going to school.
   विद्यार्थी स्कूल नहीं जा रहे होंगे।
3. They are not running.
   वे नहीं दौड़ रहे हैं।
4. The carpenter was not making the table.
   बढ़ई मेज नहीं बना रहा था।
5. You will not drink milk.
   तुम दूध नहीं पियोगे।

अंग्रेजी में प्रश्नवाचक वाक्यों में **'how', 'are'** तथा 'what' आदि **प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग सदैव वाक्यों के आरंभ में होता है जबकि** हिंदी में किसी बात पर विशेष बल देते **समय इन शब्दों की स्थिति बदल जाती है। उदाहरण के लिए** -

1. **Are you** going to Bombay?
   क्या आप बम्बई जा रहे हैं? / आप **बम्बई** जा रहे हैं क्या?
2. How can **you say** this?
   आप ऐसा **कैसे कह** सकते हैं?

3. **What will you say?**
   आप क्या कहते हैं?

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में उपर्युक्त वर्णित प्रकृतिगत भिन्नताओं के समय अनेक भिन्नताएँ होती हैं, जो अनुवादक के समक्ष चुनौती बन कर खड़ी हो जाती हैं। इस भिन्नता तथा भाषिक निजता को उसकी प्रकृतिगत सीमा के अंतर्गत देखा जाता है। ■ श्रेष्ठ अनुवादक वही समझा जाता है, जो दोनों भाषाओं की आंतरिक और बाह्य संरचना की पूर्ण जानकारी रखता हो, क्योंकि ऐसा होने पर ही वह मूल कथ्य के भाव को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित कर पाएगा। यदि अनुवादक भाषाओं की संरचना तथा संदर्भ को समझे बिना ही स्रोत भाषा के कथ्य के प्रत्येक शब्द को ज्यों का त्यों लक्ष्य भाषा में रूपांतरित कर देगा तो वह अनुवाद निश्चय ही हास्यास्पद होगा। अर्थ का अनर्थ हो जाने से वह अनुवाद स्वीकार्य नहीं होगा। अनुवादक की लापरवाही से हुए कुछ हास्यास्पद अनुवाद देखिए -

1. **Seven trapped miners were rescued.**
   सात फंसे हुए अल्प-वयस्क बच्चों का उद्धार किया गया। (X)
   खान में फंसे सात खनिकों को बचा लिया गया। (✔)

2. **The window was at a stone's throw.**
   खिड़की पत्थर फेंक पर थी। (X)
   खिड़की मामूली दूरी पर थी। (✔)

3. **Look beyond yourself.**
   अपने से बढकर देखो। (X)
   दूसरों का भी ख्याल रखिए। (✔)

4. **Police is patrolling the roads.**
   पुलिस सड़कों पर पेट्रोल छिड़क रही है। (X)
   पुलिस सड़कों पर गश्त लगा रही है। (✔)

5. **Prime Minister Rajiv Gandhi will release pigeons to mark the occasion.**
   प्रधानमंत्री राजीव गांधी इस अवसर पर कबूतरों का विमोचन करेंगे। (X)
   प्रधानमंत्री राजीव गांधी इस अवसर पर कबूतर उड़ाकर उद्घाटन करेंगे। (✔)

इन वाक्यों में हम देख सकते हैं कि भाषिक-प्रकृति तथा उसकी सीमा अनुवादक को किस प्रकार भ्रमित करती है।शब्द के बहु-विकल्प को समझना, उसकी संदर्भगत अपेक्षा को जानना तथा उसके लाक्षणिक प्रयोग को बोधगम्य करना जितना आवश्यक है उतना ही मूल के अर्थ एवं रूपगत सौंदर्य को सुरक्षित रखना भी महत्वपूर्ण है। तनिक सी लापरवाही, चूक या अगंभीरता अनुवादक की सीमा को उजागर करने लगती है। परिणामत: मूल सामग्री के साथ अन्याय तो होता ही है, अनूदित सामग्री हास्यास्पद भी हो जाती है। प्रथम वाक्य में **seven trapped miners** का शब्दश: अनुवाद कर 'अल्प वयस्क बच्चों' कर दिया गया है। इसमें मूल की संवेदना तो नष्ट हुई ही, उसका सौंदर्य भी समाप्त हो गया है। इसी प्रकार **at a stone's throw** का जो लक्ष्यार्थ है, वही लिया जाना चाहिए था। **Look beyond yourself** में भी इसी प्रकार की गलती की गई और उसके भीतर निहित अर्थ को सामने नहीं रखा गया। **patrolling the roads** का भी शाब्दिक अनुवाद किया जाना चाहिए था। पुलिस भला पेट्रोल क्यों छिड़केगी, सड़कों पर? अंतिम वाक्य में भी **release** करने का अर्थ विमोचन करना नहीं संदर्भ के अनुसार इसका अर्थ "उड़ाकर" किया जाना चाहिए।

7.3 अननुवाद्यता की अवधारणा

अनुवाद की सीमाएँ वास्तव में दो प्रकार से देखी जा सकती हैं। एक तो उस स्तर पर जब हम कहते हैं कि "गोदान" का, "जनेऊ" का, "फटी हुई चिट्ठी" का, "गोबर" का, "अक्षत" का तथा इसी प्रकार के अन्य कई सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद कैसे करें? यह समस्या अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों में

इसी तरह भिन्न-भिन्न रूप लिए सामने आती है। चाहे यह साहित्य हो, पत्रकारिता या मीडिया का क्षेत्र तो चाहे विज्ञान, प्रौद्योगिकी या कार्यालयी साहित्य। कुछ न कुछ ऐसा कहीं न कहीं आ ही जाएगा जो या तो चुनौती बनेगा या फिर सीमा बन कर सामने खड़ा हो जाएगा। पर इस सीमा को लाँघने का या पार करने का रास्ता हम निकाल लेते या निकाल लेना चाहते हैं। भले ही अनुवाद करते समय उसे हम विस्तार दें, संक्षिप्त करें, व्याख्यायित करें अथवा पाद-टिप्पणी देकर स्पष्ट करें।

अननुवाद्यता की दूसरी स्थिति, अर्थात अनुवाद की वह सीमा जिसका समाधान है ही नहीं, या कहें कि जिसके पर्याय रूप में हम किसी अन्य शब्द या संकल्पना को रख ही नहीं सकते। अर्थात जहाँ मूल की अद्वितीयता बनी ही रहती है। वही उसका अपना पर्याय होता या हो सकता है। ऐसे संदर्भ को हम अननुवाद्यय मान कर चलते हैं। यहाँ यह भी कह सकते हैं कि मूल पाठ की विषय-वस्तु को, उसके भाषिक सौन्दर्य को हम चाह कर भी अनुवाद में प्रस्तुत नहीं सकते। और अगर प्रयास करते हैं तो पाठक उसे उसी मूल रूप में चाहकर भी ग्रहण कर ही नहीं पाता। अत: यहाँ केवल अनुवादक की ही नहीं अनुवाद्य विषय-वस्तु की भी सीमा हमारे सामने रहती है।

7.3.1 अननुवाद्यता से तात्पर्य

अन + अनुवाद्य अर्थात् जो अनूदित नहीं हो सकता। यों भी कह सकते हैं कि जिसका अनुवाद मूल के समतुल्य, समरूप तथा समशक्ति किया ही नहीं जा सकता। अनअनुवाद्यता का प्रश्न वहाँ उठता है जहाँ स्रोत भाषा के ऐसे भाषिक और अभाषिक तत्व सीमा बन जाएँ जो लक्ष्य भाषा और उसके सांस्कृतिक स्वरूप में विद्यमान ही न हों। साथ ही वहाँ भी अननुवाद्यता की स्थिति होती हैं जहाँ अनूदित पाठ का पाठक मूल पाठ की संवेदना, संकल्पना और उसकी अर्थवत्ता को ग्रहण ही न कर पाए।

अब हम अननुवाद्यता के विभिन्न आयामों के संदर्भ में चर्चा करेंगे। अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों और उसके प्रकारों के आधार पर इन सीमाओं को देखा जा सकता हैं।

7.3.2 अननुवाद्यता के आयाम

7.3.2.1 विषय-वस्तु के स्तर पर अननुवाद्यता

स्रोत भाषा की सामग्री को अनुवादक जब लक्ष्य भाषा से रूपांतरित करने का प्रयास करता है तो सर्वप्रथम उसे यह देखना होता है कि वह सामग्री किस विषय अथवा किस ज्ञान क्षेत्र की है। उस सामग्री का संबंध किस क्षेत्र या विधा से है? यदि वह साहित्य है तो साहित्य में भी नाटक, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, डायरी, यात्रा वृत्तांत, आत्मकथा, आलोचना, शोध, समीक्षा अथवा काव्य आदि में किसकी है। ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों से सम्बद्ध है या दूर-संचार से सम्बद्ध है तो किस विषय की है। इस प्रकार, अनूद्य सामग्री अन्य कई क्षेत्रों तथा प्रकारों की भी हो सकती है। अनुवादक को उस ज्ञान-क्षेत्र विशेष की अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर ही अनुवाद करना होता है। विषय-वस्तु और कथ्यगत अनेक सीमाओं का सामना करते हुए उसे सामग्री को रूपांतरित करना होता है। अत: अननुवाद्यता विषय-वस्तु के स्तर पर भी होती है और अभिव्यक्ति के स्तर पर भी।

यहाँ हम विषय-वस्तु के स्तर पर उपस्थित होने वाली अननुवाद्यता की स्थितियों को उजागर कर रहे हैं। सर्वप्रथम साहित्य के स्तर पर उपस्थित होने वाली अननुवाद्यता की स्थिति का विवेचन किया जा रहा है।

साहित्य के स्तर पर : साहित्य की विविध विधाएँ हैं, जिनमें काव्य तथा नाटक प्रमुख हैं। वस्तुत: साहित्य भाव एवं कल्पना पर आधारित एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। उसमें तथ्य और विचार मूर्त रूप में नहीं होते बल्कि भाव और कल्पना सूक्ष्म एवं तरल रूप में होते हैं। सृजनात्मक साहित्य, ज्ञान के साहित्य की भाँति अभिधा-प्रधान भाषा में रचित नहीं होता। लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्ति ही काव्य तथा नाटक की प्राण शक्ति होती है। इसी के माध्यम से साहित्यकार की अनुभूतियाँ सहृदय के मस्तिष्क में भाव-चित्र जागृत

करने में सफल होती हैं। आपको यह तो स्पष्ट हो ही गया होगा कि अभिधा-प्रधान वाक्यों का अनुवाद करना अपेक्षाकृत सरल होता है, क्योंकि उसमें शब्दों का सीधा-सरल अर्थ होता है। इसके विपरीत, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ किसी समाज विशेष में प्रचलित मान्यताओं एवं परम्पराओं पर् निर्भर करते हैं। जैसे भारतीय चिन्तन परम्परा में 'उल्लू' शब्द का लाक्षणिक अर्थ मूर्ख है तथा अंग्रेजी चिन्तन परम्परा में owl चतुराई का प्रतीक है। ऐसे प्रसंगों में अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि मूल पाठ की रचना करने वाला व्यक्ति किस अर्थ की ओर संकेत करना चाह रहा है, यदि लक्ष्य भाषा में उस शब्द का अर्थ वह नहीं है जो उसे चाहिए तो उसे चाहिए कि वह लक्ष्य भाषा की शब्दावली में से किसी ऐसे अर्थ का चयन करे जो मूल सामग्री के वास्तविक अथवा यथासंभव समतुल्य अर्थ को प्रतिपादित करने में पूर्णत: या अधिकांशत: समर्थ हो।

काव्य में अलंकार, बिम्ब विधान, कल्पना, रस-योजना, मधुरता और लय होती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण काव्य पाठक के मन को शीघ्रता से आकर्षित और मोहित कर लेता है। अत: काव्य का अनुवाद करते समय इन सभी विशिष्टताओं को बरकरार अथवा यथासंभव सुरक्षित रखना और भी अधिक आवश्यक हो जाता है। इस तथ्य को कुछ उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है। प्राय: अलंकार, विशेषत: जिनमें उपमा या तुलना की जाती है, सामाजिक संदर्भों पर आधृत होते हैं। यह बात पहले ही स्पष्ट की गई है कि लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा का सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक परिवेश तथा संस्कार पूर्णत: भिन्न होता है। यदि हिंदी में "चरणों की कोमलता" की उपमा देने के लिए "कमल का प्रयोग" (नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं) किया जाता है तो आवश्यक नहीं कि अंग्रेजी, मलयालम रूसी या अन्य सभी भाषाओं में भी कोमलता का सूचक कमल का पुष्प ही हो। यदि अनुवादक स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के परिवेश से पूरी तरह से परिचित न हो तो सही शब्द का चयन करना उसके लिए अत्यन्त दुष्कर हो जाता है। शब्दालंकारों का अनुवाद करना तो अनुवादक के समक्ष एक बहुत बड़ी चुनौती है। श्लेष और यमक अलंकारों को मूल के अनुरूप व्यक्त करना प्राय: असम्भव ही होता है, क्योंकि मूल के जिस शब्द में द्वयर्थकता है, वह आवश्यक नहीं कि लक्ष्य भाषा के शब्द में भी विद्यमान हो। यहाँ आकर अनुवादक एक सीमा में बँध जाता है क्योंकि उसको अधिकांशत: ऐसा द्वयर्थक शब्द प्रयासरत रहकर भी प्राप्त नहीं हो पाता।

छंद कविता का प्राण-तत्व है। लय, मात्राओं तथा वर्णों की योजनाओं को दृष्टि में रख कर ही कवि काव्य्-सृजन करता है। किंतु प्रत्येक भाषा की छंद योजना भिन्न होती है। हिंदी में छंद विधान मात्राओं पर, वर्णों पर आश्रित है तो अंग्रेजी छंद-विधान दोनों में है, किंतु सांगीतिक आधार भिन्न होने से मूल का यथावत रूपांतरण नहीं हो पाता। इसे आप निम्न उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं -

उमर खैयाम की एक रुबाई को विभिन्न अनुवादकों ने भिन्न-भिन्न छंदों में रूपांतरित किया है। यहाँ आपके सम्मुख मूल तथा उसके विभिन्न अनूदित रूप प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इनसे यह स्पष्ट हो जाएगा कि सीमा अनुवाद की भी है और अनुवादक की भी -

आमर सहेर निदा जे मयखान-ए-मा।
के रिन्द खराबाती व दीवान-ए-मा।
बरखेज कि पुरकुनेम पैमान जे मय,
जां पेश कि पुरकुनंद पैमान-ए-मा।

- उमर खैयाम

अनूदित रूप :

Dreaming when Dawn's left hand was in the sky
I heard a voice within the tavorn cry.
'Awake, my Little ones, and fill the cup
before Life's Liquor in its cup be dry'

- Fitzgerald

अंगड़ाता था अरूण खड़ा, जब बढ़ा वाम कर अम्बर में
मुझे सुन पड़ा स्वप्न-राज्य में तब यह स्वर मदिरा-घर में
व्यर्थ सूखने के पहले ही जीवन-प्याली में हाला
जाग-जाग, अय मेरे शिशु-दल, ढाल-ढाल मधु पी प्याला।

- केशव प्रसाद पाठक

वाम-कनक-कर ने उषा के
जब पहला प्रकाश डाला
सुना स्वप्न में मैंने सहसा
गूंज उठी यों मधुशाला -
उठो, उठो, ओ मेरे बच्चो,
पात्र भरो, न विलम्ब करो
सूख न जावे जीवन-हाला,
रह जावे रीता प्याला।

- मैथिलीशरण गुप्त

उषा ने ले अंगड़ाई हाथ
दिए जब नभ की ओर प्रसार,
स्वप्न में मदिरालय के बीच
सुनी तब मैंने एक पुकार -
"उठो, मेरे शिशुओं नादान,
बुझा लो पी-पी मदिरा भूख
नहीं तो तन-प्याली की शीघ्र
जाएगी जीवन मदिरा सूख"

- हरिवंश राय बच्चन

स्रोत एवं लक्ष्य भाषा में ध्वनि साम्य को बनाए रखने में भी अनुवादक की कुछ सीमाएँ होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक शैली होती है, जिसके अनुरूप न केवल वह अनुवाद करता है वरन् साहित्य की भी रचना करता है। अतः अनुवादक कभी-कभी पद्य का अनुवाद गद्य में और गद्य का अनुवाद पद्य में कर देते हैं। कुछ अनुवादकों ने यथासम्भव मूल की शैली को ही लक्ष्य भाषा में बनाए रखने का सफल प्रयास भी किया है। इसका प्रमाण "रामचरित मानस" के निम्न अवतरण के अंग्रेजी अनुवाद से प्राप्त हो जाता है -

"कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि,
कहत लषन सन रामु हृदय गुनि।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही
मनसा बिस्व विजय कहँ कीन्हीं।

**"At the sound of the tinkling of
anklet and bangle,
Said Rama to Lakshman, as thoughts
gan to mingle,
I hear sounds that seem it's the
Love - God who comes.
With world-conquering cymbals
and beating of dreams."**

- एटकिन्स

एक और उदाहरण देखिए। महाकवि कालिदास रचित 'मेघदूत' के एक श्लोक का हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा गद्य में किया गया अनुवाद है तथा उसी श्लोक को कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा पद्य में किया गया

अनुवाद है -

"अचानक आषाढ़ मास की पहली तिथि को रामगिरि के सानुदेस में लगे हुए एक काले मेघ को देखकर यक्ष व्याकुल हो उठा। जैसे कोई काला मतवाला हाथी पर्वत के सानुदेश पर ढूँसा मारने का खेल खेल रहा हो। उत्कण्ठा जगाने वाले मेघ के सामने खड़ा होना क्या सहज है? वह अंतर्वाष्प हो - आँसुओं का पारावार भीतर ही विक्षुभित हो रहा था, बाहर उसका कोई चिन्ह नहीं दिखाई दे रहा था।''

- हजारी प्रसाद द्विवेदी

"आषाढ़ मास का प्रथम दिवस आया
ज्यों गजेन्द्र कीड़ा में तन्मय, टकराता टीलों से निर्भय
स्नेह जगा देने वाले के, सम्मुख हो बादल काले से,
रोक आंसुओं को कुबेर का अनुचर अकुलाया।''

- महादेवी वर्मा

अनुवादक को अगर मात्र स्रोत भाषा के दार्शनिक सांस्कृतिक संदर्भों का ही ज्ञान हो तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अनुवाद में अर्थ की ध्वनि कैसे नष्ट हो जाती है। इसके लिए एक अच्छा उदाहरण कामायनी के निम्नलिखित अवतरण (पद्यांश) के अंग्रेजी अनुवाद में मिलता है।

"नीचे जल था, ऊपर हिम था,
एक तरल था, एक सघन था,
एक तत्व की ही प्रधानता
कहे उसे जड़ या चेतन।''

- जयशंकर प्रसाद

"Below him was water, snow above,
Liquid the one, the other solid was.
One element alone dominian held
Call it inanimate or animate."

यहाँ जड़ अथवा चेतन शब्द का अनुवाद 'inanimate or animate' किया गया है, लेकिन मूल के जड चेतन का ध्वन्यार्थ जगत (matter) और चिति (spirit, consiousness) आदि से है और इस कारण से मूल की दार्शनिक अभिव्यक्तियाँ अनुवाद में व्यक्त नहीं हो पाई हैं।

काव्य के अनुवाद की भाँति ही साहित्य की **अन्य गद्य विधाओं** का अनुवाद करते समय भी अनुवादक की अपनी कुछ सीमाएँ होती हैं, जो उसे पूर्णत: मूलनिष्ठ नहीं बनने देती। कभी सांस्कृतिक-सामाजिक सीमाएँ उसे आबद्ध करती हैं तो कभी उसकी स्वयं की शैली उसे मूल की शैली का अनुकरण नहीं करने देती। कथा-साहित्य, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा तथा नाटक आदि कुछ ऐसी साहित्यिक विधाएँ हैं, जिनमें कथा-वस्तु के द्वारा केवल किसी कहानी मात्र का ही बोध नहीं होता, उसमें पात्रों के संवाद, भाषा-शैली, वातावरण चित्रण आदि के माध्यम से किसी विशिष्ट नगर या देश की संपूर्ण सभ्यता-संस्कृति, वहाँ के लोगों के आचार-विचार, लोक उत्सव-पर्व, रहन-सहन तथा खान-पान की भी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है। यद्यपि काव्य की भाँति इन साहित्यिक विधाओं में लय-तान आदि का या शास्त्रीय छंद विधान का ध्यान अधिक नहीं रखा जाता तथापि पात्रों के चारित्रिक विकास और भावों-अनुभूतियों की जटिल अभिव्यक्ति भी इस प्रकार की रचनाओं के अनुवादक के समक्ष विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न कर देती हैं। विशेष रूप से नाटक का अनुवाद करते समय अनुवादक को कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है क्योंकि कहानी या उपन्यास का अनुवाद तो पठन-पाठन के लिए ही किया जाता है किंतु नाटक की सार्थकता उसे मंचित करने में निहित है। इस बात को डॉ. प्रभाकर माचवे ने इस प्रकार स्पष्ट किया है - "नाटकों के अनुवाद की सफलता-असफलता केवल पाठ्य तक सीमित नहीं है। अभिनेयता भी आवश्यक होती है। अत: नाटक के अनुवादक के लिए सबसे आवश्यक शर्त यह है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए - मूल नाटक की मंच परम्परा का तथा जिस काल की जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है, उसकी मंच परम्परा का।''

यह तो आप जानते ही हैं कि नाटक एक संवादात्मक रचना है। अत: पात्रों के अंतर्बाह्य् व्यक्तित्व, उनके कार्य-व्यापारों, संघर्ष-द्वंद्व तथा परिवेश आदि की सम्पूर्ण जानकारी हमें संवादों के द्वारा ही प्राप्त होती है। पात्रों के वक्तव्यों के द्वारा ही उनके स्वभाव, शिक्षा-दीक्षा, संस्कारों, बौद्धिक स्तर आदि का बोध हो जाता है। प्रत्येक पात्र की अपनी एक पृथक शैली, विभिन्न शब्दों एवं वाक्यों पर बल देने की प्रवृत्ति, मुहावरे-अलंकारों के प्रयोग का स्वभाव होता है। नाट्य-साहित्य का श्रेष्ठ अनुवाद वही व्यक्ति कर सकता है जो समाज एवं संस्कृति के वैविध्य से परिचित हो; राष्ट्र एवं प्रदेश की भाषागत सूक्ष्मताओं का ज्ञाता और अध्येता हो; आम जनता के व्यवहारों तथा अभिजात्य वर्ग की गतिविधियों की अच्छी जानकारी रखत हो। ऐसा अनुवादक ही नाटक के मूल को सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषा के पाठकों तक सम्प्रेषित करता है। इस बात को शेक्सपियर कृति हैमलेट के अनुवादक श्री अमृत राय द्वारा किए गए अनुवाद के निम्न उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है -

Reynaldo	:	Ay, very well my lord.
Polonius		And in part him; - but you may say not well. But if it be he I mean, he's very wild; Addicted so and so; and there put on him. What forgeries you please; marry none so rank. As may dishonour; take heed to that; But, Sir, such wanton, wild, and usual slips. As are companions noted and most known. To youth and liberty.
Reynaldo	:	As gaming my lord.
Polonius		Ay, or drinking, fencing, swearing, quarreling. Drabbing You may go so far.
Reynaldo	:	Ay Lord, that would dishonour him.

- 'Hamlet' - Shakespeare

अनुवाद

रेनाल्डो	:	जी हजूर, अच्छी तरह।
पोलोनियस	:	तुम कह सकते हो, थोड़ा-थोड़ा जानता हूँ पर ढंग से नहीं, लेकिन अगर यह वही आदमी है जिसकी बात मैं कर रहा हूँ तो वह बड़ा बिगड़ैल आदमी है, जमाने भर की लतें लगीं है उसके साथ। ऐसी-वैसी और फिर उसमें जो मनचाहे जड़ देना मगर ऐसी कोई बात नहीं जिससे उसकी इज्जत पर दाग लगता हो। इसका अच्छी तरह ख्याल रखना। पर हाँ उन सब रोज-रोज की, जानी पहचानी शोखियों का, शरारतों का, लतों का जिक्र कर सकते हों जिसका आजाद जवानी से चोली-दामन का साथ है।
रेनाल्डो	:	जैसे जुआ खेलना, हुजूर।
पोलोनियस	:	हाँ, या शराब पीना, तलवार खींच लेना, गाली बकना, लड़ना-झगड़ना, बाजारू औरतों की संगत करना। यहाँ तक तुम जा सकते हो।
रेनाल्डो	:	इससे उनके नाम पर धब्बा लगेगा, हुजूर।

- अमृतराय द्वारा अनुवाद

वैज्ञानिक साहित्य के स्तर पर : जैसे-जैसे विश्व प्रगति की ओर अग्रसर होता जा रहा है, वैसे-वैसे विज्ञान-विषयक साहित्य का सृजन अधिक परिमाण में होता जा रहा हैं, किन्तु विडम्बना यह है कि हमारे यहाँ सृजनात्मक साहित्य की तुलना में वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद बहुत कम हुआ या हो रहा है। अंग्रेजी, जर्मन, रूसी तथा जापानी भाषाएँ इस दिशा में अग्रणी रही हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य की पारिभाषिक शब्दावली अत्यन्त सुनिश्चित होती है।अपनी भाषा में पर्याय न होने पर अनुवादक को या तो स्रोत भाषा की पारिभाषिक शब्दावली को ग्रहण करना पड़ता है या उसका अपनी भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुकूलन करना पड़ता है। विज्ञान की भाषा की यथातथ्यता को प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण बनाए रखना अनुवादक का दायित्व होता है। यह दायित्व ही कभी-कभी अनुवाद की सीमा बन जाता है।

कथ्य की अनिश्चितता सृजनात्मक साहित्य में तो स्वीकार्य होती है किन्तु वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में अस्पष्टता सबसे बड़ा अवगुण मानी जाती है। अत: वैज्ञानिक कृतियों के अनुवादक को पूर्णता एवं स्पष्टता का विशेष ध्यान रखना होता है। वैज्ञानिक लेखक का उद्देश्य विषय से संबंधित जानकारी अधिक से अधिक सीधे ढंग से प्रदान करना होता है। इसलिए इस प्रकार की कृतियों के अनुवादक को विषय का ज्ञान रखने के साथ-साथ अपने साहित्यिक कौशल को दिखाए बिना मूल के सभी तथ्यों का रूपांतरण लक्ष्य भाषा में करना पड़ता है। साथ ही उसे किसी शब्द को विषय विशेष में अर्थ समझते हुए अनुवाद करना होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिति वाक्य को लीजिए

यहाँ woody portions का अर्थ है साग-सब्जी, फसल आदि के डंठल, छिलके आदि कडे भाग। यदि अनुवादक जीव विज्ञान का ज्ञान नहीं रखता होगा तो वह woody portions का अनुवाद "काष्ठमय भाग" कर देगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्रोत भाषा की विषय वस्तु को लक्ष्य भाषा में परिवर्तित अथवा रूपांतरित करने की प्रक्रिया में अनुवादक को अनेक सीमाओं समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसी मूल रूप में जब एक विषय वस्तु को हम उसी परिवार की भाषा और शब्दावली में ही नहीं ढाल या उतार पाते तो विदेशी भाषा में तो यह कठिनाई और भी मुखर हो जाती है। वास्तव में अनुवादक सर्वज्ञ या सर्वज्ञाता नहीं होता। हो सकता भी नहीं। उससे यह अपेक्षा करना भी उचित नहीं। ठीक वैसे ही, जैसे हम बहुज्ञता की कल्पना तो कर सकते हैं, किन्तु सर्वज्ञता की नहीं, अनुवाद में हम मूल रूप की यथारूप प्रस्तुति की कल्पना नहीं कर पाते। यथासंभव समतुल्य रूप से ही हमें समझौता करना होता है। किन्तु इन सीमाओं के बावजूद अनुवादक अपने गंभीर दायित्व का निर्वाह करता है और अनुवाद कर समाज तथा विश्व की एक महत्वपूर्ण अपेक्षा की पूर्ति भी करता है।

7.3.2.2 अभिव्यक्ति के स्तर पर अननुवाद्यता

अनूद्य विषय-वस्तु की विविधता को देखकर यह विदित होता है कि अनुवाद किसी रचना की फोटोप्रति नहीं हो सकता। उसमें कुछ-न-कुछ अंश अवश्य ऐसे होते अथवा हो सकते हैं, जिन्हें यथावत्-यथारूप अनूदित करना सम्भव नहीं हो पाता। जैसे 'कचौड़ी' हिन्दी भाषा-भाषियों का एक ऐसा शब्द है जो उनके खान-पान की एक विशेष वस्तु को ध्वनित करता है। हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करते समय कचौड़ी शब्द को यथावत् अनूदित करना सम्भव नहीं है। इसी स्थिति को अननुवाद्यता कहा जाता है। वास्तव में पाठ में कई ऐसे भाषिक रूप होते हैं, जिनका अनुवाद नहीं हो पाता। इसमें कई बार भाषा की संरचना तथा अर्थगत कठिनाइयाँ सामने आती हैं और कई बार सामाजिक-सांस्कृतिक कठिनाइयाँ।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृतिगत सीमाओं (भाग 7.2) के संदर्भ में हम यह देख चुके हैं कि प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशिष्ट संरचना होती है, जिसे ज्यों का त्यों अन्य भाषा में रूपांतरित नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त, स्रोत भाषा के शब्द, वाक्य रचना आदि का पर्यायवाची रूप कभी-कभी लक्ष्य भाषा में प्राप्त नहीं होता क्योंकि मूल पाठ का लेखक, मूल पाठक के लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करता है। जबकि लक्ष्य भाषा का पाठक उन अभिव्यक्तियों से अनभिज्ञ होता है। अत: अनुवाद की कुछ सीमाएँ बन जाती हैं, जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता।

प्रत्येक भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं जिनको प्राय: पर्यायवाची समझा जाता है। अत: उनमें से कौन-सा शब्द, लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप है अथवा हो सकता है, इसका चयन अनुवादक अपनी ही सूझ-बूझ से करता है। उदाहरणार्थ कोमल, मृदु, मृदुल, मुलायम, नाजुक, नरम - सभी का भाव एक समान होते हुए भी प्रयोग से अर्थ भिन्नता स्थापित हो जाती है। जैसे कोमल शब्द का प्रयोग शारीरिक अंगों की सुकुमारता के संदर्भ में किया जाता है। तो मृदु शब्द का प्रयोग मृदु भाषी के लिए किया जाता है तथा मुलायम शब्द किसी वस्तु की विशेषता को इंगित करता है। यदि soft voice का अनुवाद मुलायम आवाज किया जाए तो वह उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। इसी प्रकार दु:ख, दर्द, विषाद और शोक का स्पष्ट अर्थ गत अंतर हिन्दी में हैं। अत: अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय अनुवादक का इन पर्यायवाची शब्दों की अर्थ छवियों को जानना आवश्यक होता है।

इसी प्रकार, किसी भाषा के सभी शब्दों अथवा भाषिक इकाइयों का अर्थ सदैव एक समान नहीं होता। विभिन्न संदर्भों के अनुकूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन होते रहते हैं। जैसे हिन्दी में पानी शब्द भिन्न-भिन्न संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है -

शर्म से पानी-पानी हो जाना।	-	To feel deeply ashamed.
गंगा का पानी शुद्ध है।	-	Ganga water is pure.
इस मोती में पानी नहीं है।	-	This pearl bears no shine.
उसकी आँखों में बिल्कुल पानी नहीं है।	-	He does not feel ashamed.

मूल पाठ के लेखक के समान, अनुवादक को भी शब्दों का चयन करना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक शब्द औपचारिकता-अनौपचारिकता, आदर-अनादर, बोलचाल के रूप, धर्म, शिक्षा, क्षेत्रीय प्रभाव आदि को दर्शाता है। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि मूल का जो शब्द औपचारिक रूप में प्रयुक्त होता हो, उसका अनूदित रूप भी इसी रूप में प्रयुक्त हो। वह अनौपचारिक रूप में भी प्रयुक्त हो सकता है। यहीं आकर अनुवाद स्थिर हो जाता है - यही अनुवाद की सीमा है। आप कुछ उदाहरण देख सकते हैं -
अंग्रेजी में बड़े, छोटे या अपनी उम्र के व्यक्तियों से एक ही प्रकार से बातचीत करने की पद्धति है। उसकी वाक्य-रचना से आदर-सम्मान का बोध नहीं होता। जैसे -

Will you take meals?

1. क्या आप खाना खाएँगे?
2. क्या तुम खाना खाओगे?
3. क्या तू खाना खाएगा?

Now you may go का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है -

1. अब आप जा सकते हैं।
2. अब तुम जा सकते हो।
3. अब तू जा सकता है।

कभी-कभी अनुवादक के समक्ष ऐसी अभिव्यक्तियाँ भी आ जाती हैं, जिनके लिए लक्ष्य भाषा में उपयुक्त शब्द ही नहीं मिलते। यहाँ आप एक दोहे में देख सकते हैं कि समुद्र के लिए इन पर्यायों का प्रयोग किया है। यदि इसे अंग्रेजी में अनूदित करने का विचार किया जाए तो निश्चय ही समुद्र शब्द के दस पर्याय उसमें नहीं मिलेंगे, जिससे मूल का भाव लक्ष्य भाषा में रूपांतरित नहीं हो पाएगा -

"बांध्यो बननिधि नीर निधि, जलधि सिन्धु बारीस,
सत्य तोयनिधि कम्पति, उदधि पयोधि नदीस।''

शब्द-विधान, अर्थ-विधान, रूप-विधान की भाँति ही प्रत्येक भाषा की वाक्य-संरचना भी भिन्न होती है। हिन्दी में एक ही बात को भिन्न-भिन्न शैलियों में व्यक्त किया जा सकता है, उन सभी के पर्याय अन्य भाषा अथवा लक्ष्य भाषा में प्राप्त नहीं होते। अत: अनुवादक के समक्ष यह एक चुनौती का कार्य है कि वह मूल के भाव को किस प्रकार अन्य भाषा में रूपांतरित करता है। उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

यह काम तुम्हारे बस का नहीं है।	
यह काम तुम्हारे बस का कहाँ है।	You may not be able to do this work.
यह काम तुम नहीं कर सकोगे।	
यह काम तुम्हारे बस से बाहर है।	
यह काम तुम्हारी औकात से परे है।	This work is beyond your capacity/access/limit.

इस प्रकार, भाषा के व्याकरणिक या कोशगत रूपों का पूर्णतया रूपांतरण नहीं हो सकता। कोई श्रेष्ठ अनुवादक, जो स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति से पूर्णत: परिचित हो, वह भी इन सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर सकता। इन्हीं सीमाओं के कारण स्रोत भाषा के पाठ और लक्ष्य भाषा के पाठ परस्पर

संबंधित तो होते हैं, उनमें भाव का सम्प्रेषण भी किया जाता है किन्तु विशिष्ट भाव तथा शैली की पूर्ण अभिव्यक्ति अनूदित कृति में नहीं हो पाती।

बोध प्रश्न-1

1. अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृतिगत सीमाओं को किस-किस रूप में देखा जाता हैं?

_____

_____

_____

_____

2. अननुवाद्यता से क्या अभिप्राय है? "अननुवाद्यता'' के कौन-कौन से दो आयाम होते हैं?

_____

_____

_____

_____

7.4 अनुवाद की सीमाएँ : सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

भाषा और संस्कृति परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। यहाँ पर "संस्कृति'' शब्द को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया गया है। इसमें संस्कृति के भौतिक रूप - खान-पान, वेश-भूषा, आदि तथा आधिभौतिक रूप - धार्मिक विश्वास, रीति-रिवाज, विचार-दृष्टि, परम्पराएँ - दोनों सम्मिलित होते हैं। अनुवाद में सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाएँ वहाँ सामने आती हैं, जहाँ स्रोत भाषा की सांस्कृतिक विशिष्टताएँ लक्ष्य भाषा की संस्कृति में विद्यमान नहीं होती। धोती, रायता, जनेऊ, पूरी, हलवा, लोटा, लहँगा आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जो भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, किन्तु इन्हें अंग्रेजी, रूसी, जर्मनी आदि विदेशी भाषाओं में यथावत्-यथारूप रूपांतरित नहीं किया जा सकता। ऐसे शब्दों के पीछे एक सुदीर्घ परम्परा होती है, एक खास परिवेश और बोध होता है। इनका शब्दानुवाद किया जाए तो सांस्कृतिक संदर्भ नष्ट हो जाता है। अतः इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का अनुवाद करते समय अनुवादक उलझन में पड़ जाता है। हम इस संदर्भ में निम्न शब्दों को देख सकते हैं-

उबटन : यह शब्द पूर्णतः सांस्कृतिक शब्द है। अंग्रेजी में यद्यपि इसका अनुवाद **A paste for the massage** के रूप में किया गया है, किन्तु इससे उबटन से संबंधित पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती। उसका वैज्ञानिक आधार स्पष्ट नहीं होता।

रोटी : हिन्दी में इसका अर्थ खाना, चपाती, सब तरह के भोजन से है। यदि इसका अंग्रेजी अनुवाद **Bread** किया जाए तो पूरी तरह उपयुक्त नहीं होगा।

कैटफर्ड के मतानुसार, ऐसे शब्दों को इसी प्रकार रखा जाए और नीचे पाद-टिप्पणी में उसकी पूर्ण अर्थ छवि को विस्तार से समझाया जाना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्य भाषा के पाठक को शब्द के वास्तविक अर्थ को समझने में सुविधा होगी तथा वह उसके सांस्कृतिक परिवेश से भी अवगत हो जाएगा।

रिश्ते-नातेदारी की शब्दावली के अनुवाद में कठिनाई यह होती है कि उसमें एक पूरी सामाजिक व्यवस्था निहित होती है। हिन्दी में विभिन्न रिश्तों को सम्बोधित करने के लिए भिन्न-भिन्न शब्द उपलब्ध हैं। जैसे - चाचा, मामा, ताऊ, फूफा, मौसा, चचेरा भाई, मौसेरा भाई, देवर, भाभी, साली, जेठ, जेठानी आदि। किन्तु अंग्रेजी में चाचा, मामा, ताऊ, फूफा, मौसा के लिए मात्र एक शब्द है - **Uncle**। इसी प्रकार, चचेरा भाई, चचेरी बहन, मौसेरा भाई, ममेरी बहन आदि के लिए भी मात्र **Cousin** शब्द का प्रयोग किया जाता है इसी प्रकार **Brother-in-law** जीजा भी है और साला भी।

"मुहावरे और लोकोक्तियाँ समाज के सम्मिलित अनुभव की लोक कल्पना में रंगी अभिव्यक्तियाँ होती है।" प्रत्येक मुहावरे एवं लोकोक्ति में उस भाषा के बोलने वाले की सांस्कृतिक परम्पराएँ निहित होती हैं। चूंकि प्रत्येक भाषा-भाषी समाज की भिन्न-भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्टताएँ होती हैं और उसमें उनके अपने सामूहिक अनुभव सम्मिलित होते हैं। इसलिए प्रत्येक भाषा में विशिष्ट मुहावरे और लोकोक्तियां पाई जाती हैं जिनके सांस्कृतिक संदर्भ अलग-अलग हैं। ऐसे में अनुवादक के समक्ष एक कठिनाई उपस्थित हो जाती है। अनुवादक को चाहिए कि जहाँ लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के मुहावरे और लोकोक्ति के समान अथवा समतुल्य मुहावरे-लोकोक्ति उपलब्ध हों, वहाँ वह उन्हें अपना ले। जहाँ पूर्ण रूप से समान अथवा समतुल्य मुहावरा-लोकोक्ति उपलब्ध न मिले वहाँ पर अर्थ की दृष्टि से समान मुहावरा-लोकोक्ति को प्रतिस्थापित किया जा सकता है। इस संदर्भ में भी हम कुछ उदाहरण देख सकते हैं -

मुहावरे

A drop in the ocean	ऊँट के मुँह में जीरा
To flatter a fool for expediency	गधे को बाप बनाना
To give a tough fight	दांत खट्टे करना

लोकोक्तियाँ :

Empty vessel makes much noise	अधजल गगरी छलकत जाए
Cut your coat according to your cloth	तेते पाँव पसारिए जेती चादर होय
A figure among cypher	अंधों में काना राजा

सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की ये सीमाएँ न केवल भिन्न-भिन्न राष्ट्रों की भाषाओं में ही दृष्टिगत होती हैं, बल्कि एक ही राष्ट्र की भिन्न-भिन्न भाषाओं में भी मुखर होती हैं। हर देश की पृथक भाषा की पृथक-पृथक प्रकृति एवं सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्टताएँ होती हैं जिनके कारण अनुवादक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भारत इसका एक अच्छा उदाहरण है। भारत में प्रत्येक प्रदेश के अपने कुछ विशिष्ट पर्व एवं त्यौहार हैं। यदि अनुवादक को स्रोत भाषा के इन सांस्कृतिक उत्सवों की पूर्ण जानकारी नहीं होगी तो वह मूलनिष्ठ अनुवाद नहीं कर सकेगा। इसी के साथ ही विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेशों के व्यक्तियों के खान-पान, वेश-भूषा, रीति-रिवाज भी भिन्न होते हैं, उनकी सांस्कृतिक विशेषताएँ इन्हीं के माध्यम से व्यक्त होती हैं।

7.5 अनुवाद की क्षेत्रीयतापरक सीमाएँ

अनुवाद की विभिन्न सीमाओं में क्षेत्र तथा राष्ट्र, जातीयता आदि की भी कई सीमाएँ देखी जाती हैं। यदि हम बहुभाषी भारत के परिप्रेक्ष्य में लें तो भी, और यदि "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना के परिप्रेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीयता के स्तर पर लें तो भी, यह सीमा और समस्या मुखर रूप में सामने आती है। अकेले भारत में ही अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलन में हैं। संस्कृत, हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, बंगला, उड़िया, असमिया, उर्दू, सिंधी, नेपाली, मराठी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु, तमिल तथा अंग्रेजी आदि भाषाएँ यहाँ बोली, पढ़ी और लिखी जाती हैं। सभी भाषाओं का अपना साहित्य है। भिन्न-भिन्न भाषाओं मे अभिव्यक्त विभिन्न संस्कृतियों का, वैचारिकता का जब हम परस्पर अनुवाद करते हैं तो अनेक सीमाओं क सामना करना पड़ता है। इन सभी भारतीय संस्कृतियों का तो एक जातीयता या राष्ट्रीयता की संस्कृति में विलय हो भी जाता है या हम किसी सीमा तक उनमें तालमेल बना कर अनुवाद कर भी लेते हैं किन्तु जब किसी विदेशी भाषा में इसके अनुवाद की स्थिति आती है या विदेशी भाषा/भाषाओं से किसी भारतीय भाषा में अनुवाद की स्थिति आती है तो क्षेत्रीयतापरक, संस्कार और संस्कृतिपरक, वैचारिकता और मानसिकतापरक, संकल्पना और अर्थवत्तापरक, संदर्भ और स्थितिपरक भिन्नता के कारण भी कई समस्याएँ सामने आ जाती हैं, जिनके निवारण के लिए अनुवादक को जूझना या संघर्ष करना पड़ता है। वह बेचैन होता है कि सही-सार्थक और सटीक अभिव्यक्ति वह नहीं दे पा रहा। अनुवाद की सीमाएँ उसे

बार-बार विवश करती हैं और अनुवादक यत्र-तत्र करते हुए उन सीमाओं को लाँघने या पार करने के लिए युक्तियाँ तलाशता है।

इसी प्रकार, यदि हम बोलियों के संदर्भ में अनुवाद की सीमाओं को देखें तो यह समस्या और विकराल हो जाती है। हालाँकि एक ही देश की भाषा और बोली होने से उनमें शब्द भंडार तथा वाक्य-रचना के नियमों की कुछ समानता हो सकती है, किन्तु फिर भी हम इस प्रकार की सीमाओं से जूझते अवश्य रहते हैं। भारतीय भाषाओं को तो उनके परिवार या वर्ग के रूप में भी देख सकते हैं किन्तु जब अंग्रेजी, चीनी, जापानी, फ्रेंच, स्पेनी, चैक, इटेलियन, रूसी तथा जर्मनी आदि भाषाओं से हिन्दी अनुवाद या हिन्दी से इन भाषाओं में अनुवाद की स्थिति आती है तो सीमा और समस्या भी भिन्न प्रकार की हो जाती है। इन भाषाओं में ध्वनि-व्यवस्था, शब्द-भंडार, रूप रचना तथा वाक्य-रचना का अंतर ही अनुवाद तथा अनुवादक के लिए कठिनाई भरी चुनौती पैदा करता है। कुछ उदाहरण देखें।

- 'अतीत' शब्द तमिल में 'बहुत' या 'बड़ा' का द्योतक है जबकि हिन्दी में 'बीता हुआ' या 'भूत' का।
- 'बृहस्पति' शब्द तमिल में 'मूर्ख' या 'नासमझ' का द्योतक है और हिन्दी में 'बुद्धिमान' का।
- 'जहान' शब्द नेपाली में 'परिवार' या 'पत्नी' का द्योतक है तथा हिन्दी में 'जगत संसार' का।
- 'जवान' शब्द नेपाली में 'व्यक्ति' का 'द्योतक' है, हिन्दी में 'युवा' का।
- 'बनिया' शब्द उड़िया में 'सुनार' का द्योतक है, हिन्दी में 'वैश्य' या 'व्यवसायी' का।
- 'सड़ना' शब्द पंजाबी में 'जलना' का द्योतक है, हिन्दी में 'सड़-गल' जाने का।
- 'कनक' शब्द पंजाबी में 'गेहूँ' का द्योतक है, हिन्दी में 'सोना' का।
- 'यजमान' शब्द कन्नड़ में 'पति' या 'मालिक' के लिए है तो हिन्दी में 'पूजा पाठ कराने वाला' का।

इसी प्रकार, अंग्रेजी से हिन्दी या हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करते हुए अंग्रेजी भाषा के वाक्यों और उपवाक्यों के अनुवाद की समस्या भी सामने आती है। यही नहीं, ब्रिटिश अंग्रेजी और अमरीकी अंग्रेजी में भी पर्याप्त अंतर मिलता है।

यथा -

ब्रिटिश अंग्रेजी	**अमरीकी अंग्रेजी**
Booking Clerk	**Ticket Agent**
Car	**Automobile**
Driver (of train)	**Engineer**
Guard	**Conductor**
Inquiry officer	**Information Officer**
Lorry	**Truck**
Railway Station	**Railroad depot**

बोध प्रश्न-2

1. खान-पान, उत्सव-पर्व तथा वस्त्राभूषण आदि सामाजिक-सांस्कृतिक से सम्बद्ध शब्दावली और संकल्पनाओं का अनुवाद कैसे किया जाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

2. विभिन्न विषय क्षेत्रों से संबद्ध सामग्री का अनुवाद करते समय अनुवादक को किन-किन सीमाओं का निराकरण करने के लिए जूझना पड़ता है?

3. क्या क्षेत्रीयता की सीमा अनुवाद की सीमा है? यदि हाँ, तो उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

7.6 सारांश

इस विवेचन के आधार पर आप यह जान गए होंगे कि किसी विषय को पढ़ना और उस पर बातें करना अपेक्षाकृत सरल है। मगर उन्हीं बातों को मूर्त रूप में परिणत करने पर ही लेखक की कुशलता की जाँच हो पाती है। किसी भी रचना का - चाहे साहित्यिक हो या तकनीकी, बैंकिंग साहित्य से संबंधित हो या खेल-कूद से संबंधित - जब हम अनुवाद करने लगते हैं तो मूल रचना अनुवादक के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर देती है। अनुवादक अपनी सीमाओं में बँधा हुआ यथा-सम्भव स्रोत भाषा की सम्पूर्ण अर्थच्छवियों को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करने का प्रयास करता हे। कभी भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मूल को यथावत लक्ष्य भाषा में रूपांतरित नहीं होने देती तो कभी स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृतिगत भिन्नताएँ अनुवाद को मूलनिष्ठ होने से रोकती हैं। फिर भी अनुवादक अपनी सूझ-बूझ, विवेकशीलता, विषय-बोध, सामाजिक-सांस्कृतिक परिचय का बोध कराता हुआ स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करके विभिन्न भाषा-भाषी जन-समुदायों को अधिक-से अधिक जानकारी प्रदान करता है।

7.7 शब्दावली

मूलानुकूल	:	मूल के अनुरूप
अननुवाद्यता	:	वह मूल सामग्री, जिसका अनुवाद नहीं हो सकता।
द्वयर्थकता	:	दो अर्थ प्रकट करना
दुष्कर	:	कठिन
अनभिज्ञ	:	जानकारी न होना
सुदीर्घ	:	लम्बी
मूलनिष्ठ	:	मूल के प्रति निष्ठावान
परिमाण	:	मात्रा
अग्रणी	:	आगे रहने या गिने जाने वाले
मेधा	:	बुद्धि

7.8 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. देखिए, भाग 7.2
2. देखिए, भाग 7.3

बोध प्रश्न-2

1. देखिए, भाग 7.4
2. देखिए भाग 7.5
3. देखिए भाग 7.6